गुप्तकालीन मंदिर स्थापत्य कटनी (जिले के सन्दर्भ में)

* बुद्धिमान पाठक

गुप्तकाल में ही सर्वप्रथम मंदिर स्थापत्य का निर्माण प्रारम्भ हुआ । इस काल में वैष्णव, शैव, शाक्त, जैन, बौद्ध आदि धर्मों के मध्य समन्वय स्पष्ट दृष्टिगोचर होता है । इस काल में मंदिर स्थापत्य के अतिरिक्त अभिलेखों, प्रतिमाओं, मुद्राओं आदि का विकास भी हुआ था । गुप्तकाल को इन्हीं कारणों से स्वर्ण युग भी कहा जाता है । कटनी जिले में तिगवा, कूँड़ा, डिठवारा, सिन्दूर्सी आदि पुरास्थलों में गुप्तकालीन कलावशेष विद्यमान हैं । इन पुरास्थलों के मंदिरों के निर्माण योजना में एक वर्गाकार गर्भगृह और चार स्तम्भों से युक्त एक खुले मण्डप का विधान स्पष्ट दिखाई देता है, यहाँ द्वारशाखा के अलंकरण की प्रवृत्ति भी दिखाई देती है। तिगवा के द्वारशाखा के ऊपरी हिस्से में गंगा – यमुना में अत्यन्त लयबद्धता के साथ प्रदर्शित किया गया है । इनके प्रवेश द्वार की उदग्र शाखाएँ और उन पर वल्लरियों की सज्जा अत्यन्त मोहक है । गुप्त मंदिरों की विकासशील स्थिति का आभास कूँड़ा के शंकरमढ़ नामक मंदिर में किया जा सकता है । उन्नत एवं अवनत पद्मयुक्त भरणी, वृत्तों में उत्फुल्ला पद्म का अंकन, दोहरी धरणी, शी र्स्थ चौकी पर दो कीर्तिमुखों का अंकन, विपरीत दिशा की ओर मुँह किए ऊँकडू बैठे एक – एक सिंह की आकृति तथा उनके बीच में वृक्ष का अंकन अत्यन्त सुंदर एवं सजीव है । इनमें अन्तराल के भराव का कार्य अत्यन्त वैज्ञानिक है । कूँड़ा, मढ़िया, डिठवारा और कारीतलाई के गुप्त मंदिरों के गर्भगृह वर्गाकार हैं ।

इन मंदिरों में स्तम्भों और द्वार शाखा के प्रणयन में शिल्पी की सीमित मानसिक स्थिति का बोध होता है तो तिगवा के मंदिर में उसके उन्मुक्त शिल्प सृजन का साक्षात्कार दृ ष्टव्य है।

तिगवा का मंदिर स्थापत्य—तिगवा गाँव (23^0 40′ उत्तर, 80^0 05 पूर्व) बहोरीबन्द में स्थित है । यह जबलपुर से 45 कि.मी. की दूरी में उत्तर पूर्व में स्थित है । यह मंदिर चारों – ओर से बहोरीबन्द पठार से घिरा हुआ है । बहोरीबन्द से यह पूर्व में लगभग 3 किलोमीटर की दूरी पर स्थित है । यह मंदिर पाषाण का निर्मित 5 वीं शती ई. का है । यह स्थान (तिगवा) गुप्तकाल के प्रारम्भिक मंदिर के लिए प्रसिद्ध है । मंदिर का नाम कंकालीदेवी है, परंतु मूलरूप से वह शिव मंदिर था, पड़े हुए अवशेषों से स्पष्ट होता है कि गुप्तकाल के पश्चात् भी यहाँ पर अनेक मंदिरों का निर्माण हुआ था ।[1] कंकाली देवी मंदिर की वास्तुगत विशेषताएँ निम्ननिखित हैं—

भू—विन्यास—यह मंदिर आयताकार चबूतरे पर स्थित है, मंदिर के केवल दो प्रमुख भाग हैं – अर्धमण्डप तथा गर्भगृह । अर्धमण्डप का भू—विन्यास आयताकार है जिसमें चार स्तंभ तथा दो अर्ध—स्तम्भ हैं। गर्भगृह 2.50 मीटर माप का वर्गाकार है तथा इसमें प्रवेश के लिए बीच में प्रवेश द्वार की व्यवस्था है। गर्भगृह के अंदर दोनों किनारों पर लकड़ी के दरवाजे स्थापित करने के लिए चूल—छिद्र बने हुए हैं।[2]

जगती—मंदिर कम ऊँचाई की आयताकार जगती के बीचों बीच बना हुआ है। जगती का किनारा गढ़न युक्त है, नीचे के भाग पर कुम्भ सदृश्य गढ़न का तथा ऊपर की सतही पाषाण पटिये का, किनारा कलश सदृश्य गढ़न का है । जगती पर पहुँचने के लिए उसके चौड़ाई अर्थात् सामने के भाग पर चन्द्रशाल सहित तीन सीढ़ियों की व्यवस्था है । संरचना को देखने से प्रतीत होता है कि आरम्भिक अवस्था में यह जगती (चबूतरा) नहीं रहा होगा, बल्कि मंदिर केवल अधि ठान पर बनाया गया होगा, जो आज पूर्णरूप से जगती से ढँका हुआ है। मंदिर तथा जगती के फर्श समान ऊँचाई के है ।[3]

दीवार—मंदिर की दीवार को तराशे गए बड़े – बड़े तथा लम्बे पाषाण खण्डों को एक के ऊपर एक रखकर निर्मित किया गया है । दो पाषाण खण्डों के सन्धि पर ऊपर का पाषाण रखा गया है, सम्पूर्ण दीवार के निर्माण में इसी पद्धति को अपनाया गया है, जिससे दीवार लम्बे समय तक टिकाऊ बनी रहे। दीवार के जन्घा अर्थात् नीचे के भाग पर सह – पट्टिका सहित कुंभ आकृति का गढ़न है, शेष दीवार बाहर से तथा भीतर से सादी है । दाहिनी ओर की दीवार में प्रणाल बना हुआ है जो संकेत देता है कि अपनी प्रारम्भिक अवस्था में यह एक शिव मंदिर था । केवल मण्डप के छत को संभाली हुई उभरी बड़ेरी संपूर्ण मंदिर की दीवार पर , क्षैतिज रूप में, बाहर की ओर दिखलाई पड़ती है, जिस पर कुछ ऊँचाई छोड़कर गर्भगृह की छत पर पट्टिका का गढ़नयुक्त किनारा बाहर निकला हुआ है ।[4]

छत तथा वितान—गर्भगृह की छत को विशाल एवं समतल पाषाण पटिया को क्षितिजाकार रखकर बनाया गया है । पट्टियों की सन्धि ढ़ँकी हुई हैं , जिससे वर्षा का जल गर्भगृह में प्रविष्ट न हो। मण्डप की छत बड़ेरी के ऊपर स्थित आन्तर – पट्ट पर अवलम्बित है तथा गर्भगृह की छत से नीची एवं सपाट है । इसके वितान पर खिले हुए पद्म का अंकन, पाषाण को तराशकर किया गया है ।

स्तम्भ—मण्डप में सामने की ओर चार स्तम्भ एवं पीछे की ओर दो अर्ध—स्तम्भ हैं । सामने के स्तम्भों की यह विशेषता है कि बीच के स्तम्भों के बीच की दूरी बगल के स्तम्भों के बीच की दूरी से अधिक है, संभवतः प्रवेश को सुगम बनाने के लिए ऐसी व्यवस्था की गई थी। स्तम्भों का ऊँचा आधार भाग का अनुप्रस्थ काट वर्गाकार है। यष्टि का भाग आठ पटल का है तथा उसके ऊपर का भाग सोलह पहलुओं का बीच—बीच में अलंकृत सह – पट्टिकाएँ हैं । सभी फलकों पर पुष्प अथवा पुष्प पंखुड़ियों का अंकन है । ऊपर अलंकृत सह – पट्टिका

* अतिथि व्याख्याता, प्रा.भा. इति, सं एवं पुरात्व विभाग, रानी दुर्गावती विश्वविद्यालय, जबलपुर (म.प्र.)

सहित धर –पल्लव है, जो वर्गाकार शीर्ष में मण्डित हैं । उसका निचला भाग सँकरा है जबकि ऊपर का भाग बढ़ते क्रम में सह–पट्टिकाओं सहित बड़ा हो गया है, चारों फलकों पर नीचे की ओर दो चैत्य–गवाक्ष मानव मुख के अंकन सहित हैं तथा ऊपरी भाग पर विपरीत दिशाओं में मुख किए हुए सिंह, अर्ध बैठी हुई अवस्था में अंकित हैं उनके बीच में वृक्ष है ।[6]

प्रवेश द्वार–आयताकार प्रवेश–द्वार के दोनों ओर तथा ऊपर द्वार शाखाओं का अंकन है। इनका अंकन इस प्रकार से किया गया है कि सम्पूर्ण व्यवस्था अंग्रेजी के ''टी'' अक्षर के समान दिखलाई पड़ती है। शाखाओं की कुल संख्या सात है । भीतर से बाहर की ओर पहली शाखा पुष्प शाखा, दूसरी शाखा में द्वार के ऊपर सात वर्गाकार आकृतियाँ (लकड़ी की धन्नियों के समान), तीसरी शाखा में पुष्प – लता, चौथी शाखा सादी है, पाँचवी शाखा स्तम्भ शाखा है जिस पर बाईं ओर मकर पर खड़ी गंगा (नारी रूप में) तथा दाहिनी ओर कच्छप पर खड़ी हुई यमुना की आकृति (नारी रूप में) है, दोनों घट लिए अर्ध स्तम्भों पर स्थापित है, छटवीं शाखा सादी तथा सातवीं शाखा द्वार – पार्श्व पर सादी है, परंतु ऊपर तेरह वर्गाकार सादी बढ़ेरी आकृतियों से अलंकृत है ।[7]

कालान्तर में अर्ध – मण्डप के दोनों पार्श्वों को पाषाण खण्डों द्वारा ढँक दिया गया, जिन पर मूतियाँ उकेरी हुई हैं । इनमें से एक प्रतिमा कंकाली देवी की है, जिसके आधार पर इस मंदिर का नाम कंकाली देवी रखा गया है ।[8]

कूँड़ा का मंदिर–कूँड़ा (23^{0} 41′ उत्तर ; 80^{0} 9′ पूर्व) बहोरीबन्द से लगभग 7 कि.मी. की दूरी पर हिनौती गाँव के पास स्थित है, जिसके बाईं ओर अमगवाँ – कटनी मार्ग तहसील – सिहोरा, जिला – कटनी में है । इसका राज्य पुरातत्व एवं संग्रहालय निदेशक भोपाल द्वारा उसका पुनरोद्धार करवाया गया है ।[9] कूँड़ा का शिव मंदिर लाल बलुआ पत्थर द्वारा निर्मित किया गया है ।[10] कूँड़ा के शिव मंदिर की वास्तुगत विशेषताएँ निम्नलिखित हैं –

भू–विन्यास–मंदिर आयताकार चबूतरे पर स्थित है । मंदिर के केवल दो प्रमुख भाग हैं – मण्डप तथा गर्भगृह । मण्डप का भू–विन्यास आयताकार है । मण्डप चार स्तम्भों पर आधारित एक खुले मण्डप का विधान किया गया है ।[11] गर्भगृह की माप 5 ‘7′′ 5′ 10′′ भीतरी भित्ति तथा ब्राह्य भत्ति की माप 10 ‘8′′ 10′ 10′′है । इसमें प्रवेश के लिए मध्य में प्रवेश–द्वार की व्यवस्था है । गर्भगृह के अंदर दोनों किनारों पर लकड़ी के दरवाजे स्थापित करने के लिए चूल – छिद्र बने हुए हैं ।[12]

अधिष्ठान–मंदिर कम ऊँचाई के आयताकार अधि ठान के मध्य बना हुआ है । अधि ठान का किनारा सादा है , इसके नीचे के भाग पर कुंभ सदृश्य गढ़न तथा ऊपरी सतह पाषाण की पट्टिकाओं का किनारा सदृश्य गढ़न का है, सामने के भाग पर चन्द्रशाल का अंकन है । उत्तर गुप्तकाल में स्तम्भ पर आधारित मण्डप का निर्माण किया गया है, अर्थात् गर्भगृह प्रारम्भिक गुप्तकालीन तथा मण्डप उत्तर गुप्तकालीन है।[12]

दीवार–मंदिर की दीवार को तराशे गए बड़े – बड़े तथा लम्बे पाषाण खण्डों को एक के ऊपर एक रखकर निर्मित किया गया है । दो पाषाण खण्डों के संधि पर ऊपर का पाषाण रखा गया है जन्धा के नीचे के भाग पर सह – पट्टिका सहित कुम्भ आकृति का गढ़न किया गया है , शेष दीवार बाहर से तथा भीतर से सादी है, दाईं ओर की दीवार में प्रणाल बना हुआ है ।[14]

छत तथा वितान–गर्भगृह की छत को विशाल एवं समतल पाषाण पट्टिओं को क्षितिजाकर रखकर बनाया गया है । पट्टियों की संधि ढँकी हुई है जिससे वर्षा का जल गर्भगृह में प्रविष्ट न हो ।[15] इस शिव मंदिर में गर्भगृह के वितान को उत्फुल्ल की विलक्षण आकृति से अलंकृत करने का अनुपम उद्घाटन हुआ ।[16]

पी.के. अग्रवाल के अनुसार पूर्व में प्रवेश द्वार की धरणी पर तुलापीठ अभिकल्प बने थे तथा वितान (गर्भगृह) पर पद्मबंध का मोहक अलंकरण था । वितान पर प्रदर्शित अलंकरण में पद्म पंखुड़ियों को त्रिकोणीय (रत्न) बनाया गया है जो कलाकार की प्रयोगात्मक कलाधर्मिता का परिचायक है । उनके अनुसार मण्डप प्राक् गुप्तकाल में बना और गर्भगृह तदन्तर। इस आधार पर इसे गुप्त मंदिर वास्तु का पुरोधा मंदिर कहा जाना उपयुक्त होगा ।[17]

स्तम्भ–मण्डप चार स्तम्भों पर आधारित है , इन स्तम्भों के मध्य की दूरी किनारे के स्तम्भों के मध्य की दूरी से अधिक है । प्रवेश को सुगम बनाने के लिए ऐसी व्यवस्था की गई थी । स्तम्भों का ऊँचा आधार भाग का अनुप्रस्थ – काट वर्गाकार है । यष्टि का भाग आठ – पहलू है तथा उसके ऊपर का भाग सोलह पहलुओं का, बीच – बीच में अलंकृत सह–पट्टिकाएँ हैं।

इसका निचला भाग सँकरा जबकि ऊपर का भाग बढ़ते क्रम में सह – पट्टिकाओं सहित बड़ा होता गया है । चारों फलकों पर नीचे की ओर दो – दो चैत्य गवाक्ष मानव मुख के अंकन सहित है।

प्रवेश द्वार–मंदिर का प्रवेश द्वार आयताकार है, प्रवेश द्वार के दोनों ओर तथा ऊपर, द्वार – शाखाओं का अंकन है । यह व्यवस्था अंग्रेजी के ''टी'' अक्षर के समान दिखाई देता है । इनमें शाखाओं में पुष्प शाखा, द्वार के ऊपर सात वर्गाकार आकृतियाँ (लकड़ी की धन्नियों के समान), पुष्पलता, सादापन आदि पर स्थापित है । इसके प्रवेश द्वार का अनुपात 1 : 2 है तथा इसकी माप 0.06×1.43 मीटर है ।

डिठवारा का मंदिर–डिठवारा गाँव, मुड़वारा – तहसील, कटनी जिला से 18 किलोमीटर तथा जबलपुर से 110 किलोमीटर की दूरी पर उत्तर–पूर्व में स्थित है । यह मंदिर छटवीं शताब्दी ई. का है। यह मंदिर 285 ×285 सेंटीमीटर या 8.1225 वर्गमीटर क्षेत्र में विस्तृत है ।

जगती एवं अधिष्ठान–डिठवारा के गुप्त मंदिर में जगती को ऊँची बनाने की परम्परा की शुरूआत हुई। इसकी जगती आयताकार है। मंदिर का गर्भगृह वर्गाकार निर्मित किया गया है। इस मंदिर के गर्भगृह की ब्राह्य भित्ति पर त्रिरथों का निर्माण विकास के चरण का द्योतक है। जगती का आकार 21.15 मीटर है, जगती के साथ अधिष्ठान का भी निर्माण किया गया है ।[18]

इस मंदिर में गर्भगृह, मण्डप तथा अर्धमण्डप का विन्यास

किया गया है । गर्भगृह आयताकार (3.75×3.50 मीटर) है । गर्भगृह अंदर से वर्गाकार है । तथा इसमें विष्णु, बलराम की प्रतिमाएँ थी ।

दीवार—मंदिर की दीवार के निर्माण के लिए ईंटों का प्रयोग किया गया। मंदिर की दीवार को तराशे गए बड़े – बड़े तथा लम्बे पाषाण खण्डों को एक के ऊपर एक रखकर निर्मित किया गया है । दो पाषाण खण्डों के संधि पर ऊपर का पाषाण रखा गया है, सम्पूर्ण दीवार के निर्माण में इसी पद्धति को अपनाया गया है। दीवार के जन्घा पर सह – पट्टिका सहित कुंभ आकृति का गढ़न है शे ा दीवार बाहर से भीतर से सादी है । मण्डप के छत को संभाली हुई उभरी बड़ेरी सम्पूर्ण मंदिर की दीवार पर, क्षैतिज रूप में, बाहर की ओर दिखलाई पड़ती है ।

छत और वितान—गर्भगृह की छत को विशाल एवं समतल पाषाण पट्टियों को क्षितिजाकार रखकर बनाया गया है। पट्टियों की संधि ढँकी हुई है जिससे वर्षा का जल गर्भगृह में प्रविष्ट न हो । मण्डप की छत बड़ेरी के ऊपर स्थित अन्तर–पट्ट पर अवलम्बित है तथा गर्भगृह की छत से नीची एवं सपाट है , अर्धमण्डप का निर्माण दो स्तम्भों पर आधारित है इसके वितान पर खिले हुए पद्म का अंकन, पाषाण को तराश कर किया गया है ।

स्तम्भ— सामने की ओर चार स्तम्भों पर आधारित खुले मण्डप का विधान किया गया है । यहाँ द्वार शाखा में अलंकरण की प्रकृति दिखाई देती है । सामने के स्तम्भों की यह विशेषता है कि मध्य के स्तंभों के मध्य की दूरी किनारे के स्तंभों के मध य दूरी से अधिक है ।

प्रवेश द्वार—आयताकार प्रवेश द्वार के दोनों तरफ तथा ऊपर, द्वार शाखाओं का निर्माण किया गया है । इनके द्वार शाखाओं को अलंकृत किया गया है । कालान्तर में अर्धमण्डप के दानों पार्श्वों को पाषाण खण्डों द्वारा ढँक दिया गया । इस मंदिर में उन्नत एवं अवनत पद्मयुक्त भरणी, व त्तों में उत्फुल्ल पद्म का अंकन, दोहरी धरणी आदि अत्यन्त मोहक एवं सुंदर है । इस मंदिर में अन्तराल का भराव वैज्ञानिक है।

मढ़िया का वामन मंदिर—मढ़िया गाँव , कटनी जिले के देवरी कालन से 34 किलोमीटर की दूरी पर स्थित है । पाषाण द्वारा निर्मित यह मंदिर 500 ई. का है । यह मंदिर वर्गाकार 7 '6''× '7 6'' (225 × 225 सेंटी मीटर) या 5.0625 वर्ग मीटर है।

जगती—मंदिर का निर्माण वर्गाकार जगती पर किया गया है तथा अधि ठान की योजना भी है। जगती का किनारा गढ़ित है, नीचे के भाग पर कुम्भ सदृश्य गढ़न तथा ऊपर की सतही पाषाण पट्टिकाओं का किनारा कलश सद श्य गढ़न का है। जगती पर पहुँचने के लिए उसके चौड़ाई अर्थात् समाने की ओर चन्द्रशाल सहित सीढ़ियों की व्यवस्था है । मंदिर का गर्भगृह वर्गाकार, जगती पर पट्टिकाओं का अलंकरण तथा अधिष्ठान में खुर का प्रावधान प्रथमतः देखने को मिलता है।

दीवार—मंदिर की दीवार को तराशे गए बड़े – बड़े तथा लम्बे पाषाण खण्डों को एक के ऊपर एक रखकर निर्मित किया गया है। दो पाषाण खण्डों के संधि पर ऊपर का पाषाण रखा गया है। दीवार के जंघा अर्थात् नीचे के भाग पर सह – पट्टिका सहित कुंभ आकृति का गठन है। मण्डप के छत को संभाली हुई उभरी – बड़ेरी संपूर्ण मंदिर की दीवार पर, क्षैतिज रूप में, बाहर की ओर दिखलाई पड़ती है जिस पर कुछ ऊँचाई छोड़कर गर्भगृह की छत की पट्टिका का गढ़नयुक्त किनारा बाहर निकला हुआ है ।

छत तथा विमान—गर्भगृह की छत को विशाल एवं समतल पाषाण पट्टिकाओं को क्षितिजाकार रखकर बनाया गया है । पट्टियों की संधि ढँकी हुई है जिससे वर्षा का जल गर्भगृह में प्रवि ठ न हो । मण्डप की छत बड़ेरी के ऊपर स्थित अन्तर – पट्ट पर अवलम्बित है तथा गर्भगृह की छत से नीची एवं सपाट है । इसके वितान पर खिले हुए पद्म का अंकन, पाषाण को तराशकर किया गया है ।

स्तम्भ—मण्डप चार स्तम्भों पर आधारित है । स्तभ्भों का ऊँचा आधार भाग का अनुप्रस्थ काट वर्गाकार है । यष्टि का भाग अठ–पहलू है । सभी फलकों पर पुष्प अथवा पुष्प पंखुड़ियों का अंकन है । ऊपर अलंकृत, सहपट्टिका सहित घट–पल्लव है जो वर्गाकार शीर्ष से मण्डित है। इसका निचला भाग सँकरा है जबकि ऊपर का भाग बढ़ते क्रम में सह – पट्टिकाओं सहित बड़ा हो गया है । चारों फलकों पर नीचे की ओर दो–दो–चैत्य गवाक्ष मानव मुख के अंकन सहित है ।

प्रवेश द्वार—प्रवेश द्वार आयताकार है। प्रवेश द्वार में लकड़ी के दरवाजे का प्रयोग किया गया है। दरवाजा दो द्वार शाखाओं पर आधारित है । कालान्तर में दोनों पार्श्वों को पाषाण खण्डों द्वारा ढँक दिया गया जिन पर मूतियाँ उकेरी हुई हैं ।[20]

सन्दर्भ-

1. मिश्र, एस.एन., प्रायोगिक पुरातत्त्व, 2003, प. 169–173 2.वही , प. 169–173 3. वही, प. 169–173, 4. वही, प. 169–173, 5. वही, प. 171–173, 6. वही, प. 171–173, 7. वही, प. 171–173, 8. वही, प. 171–173, 9.मिश्र, एस.एन., गुप्त आर्ट एण्ड आर्किटेक्चर, 1992, प. 14, 10. वही, प. 14, 11.शर्मा, आर. के., हिस्ट्री, आर्कियोलॉजी एण्ड कल्चर ऑफ द नर्मदा बेली, 2007, पृ. 186 – 187, 12. वही, प 186 – 187, 13. वही, प. 186–187, 14. मिश्र, एस.एन., गुप्त आर्ट एण्ड आर्किटेक्चर, 1992, प. 73–74, 15. वही, प. 82, 16. वही, प. 82, 17. र्मा, आर. के., हिस्ट्री, आर्कियोलॉजी एण्ड कल्चर ऑफ द नर्मदा बेली, 2007, पृ. 186–187, 18. मिश्र, एस.एन., गुप्त आर्ट एण्ड आर्किटेक्चर, 1992, प. 66–68, 19.वही, प. 15–18, 20. वही, प. 89।